इकाई -14

भाषाओं का वर्गीकरण एवं भारोपीय भाषा परिवार

इकाई की रूपरेखा –

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 भाषा विज्ञान का परिचय

14.3 भाषाओं का वर्गीकरण

14.4 आकृतिमूलक वर्गीकरण

14.5 अयोगात्मक भाषाऐं

14.6 योगात्मक भाषाऐं

14. 7 पारिवारिक वर्गीकरण के आधार

14. 8 भौगोलिक वर्गीकरण की प्रक्रिया

14.9 भारोपीय भाषा परिवार

14.10 चीनी-तिब्बती भाषा-परिवार व अन्य यूरेशिया के भाषा परिवार

14.11 पारिभाषिक शब्दावली

14.12 अभ्यासार्थ प्रश्न

14.13 सारांश

14.14 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

14.0 उद्देश्य

संस्कृत एम.ए. पाठ्यक्रम के प्रथम पत्र वैदिक साहित्य और तुलनात्मक भाषा विज्ञान के अन्तर्गत चतुर्दश ईकाई 'भाषाओं का वर्गीकरण एवं भारोपीय भाषा परिवार' में विश्व में भाषाओं के वर्गीकरण मुख्य आधार व भारोपीय भाषा परिवार का मुख्य रूप से वर्णन किया गया है। इस ईकाई के अध्ययन से आप निम्न विषयों को ज्ञान प्राप्त करेंगे –

- भाषा विज्ञान का परिचय
- विश्व की भाषाओं के वर्गीकरण के आधार
- भारोपीय भाषा परिवार का विस्तृत परिचय

14.1 प्रस्तावना

आज के इस वैज्ञानिक युग में भाषा के अध्ययन के लिये तदनुरुप तुलनात्मक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, क्योकिं आज प्रत्येक विषय में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का ही विशिष्ट महत्त्व है। अध्ययन की सुविधा के लिये विश्व की भाषाओं का आकृति-प्रकृति के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। अनुमानतः विश्व में ३००० से अधिक भाषाऐं बोली जाती है। अतः भाषा के वर्तमान अध्ययन के लिये रूप, अर्थ, ध्वनि का ज्ञान ही अपेक्षित नहीं है अपितु उन भाषाओं का मूल, देश, इतिहास आदि का ज्ञान होना भी आवश्यक है।

14.2 भाषा विज्ञान का परिचय

वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्त्तते

इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते। काव्यादर्श १/३-४

अर्थात् भाषा की कृपा से ही संसार की यात्रा चलती है यह भाषारूप ज्योति ही सम्पूर्ण संसार में अपना प्रकाश फैलाये हुए है। यदि भाषारूपी यह दिव्य-ज्योति नहीं होती तो सम्पूर्ण संसार अन्धकारमय होता।

मानव अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिये जिस सार्थक मौखिक माध्यम का उपयोग करता है, वह भाषा कहलाती है। पशु एवं पक्षी भी अपनी भाषा के द्वारा परस्पर संवाद करते हैं। परन्तु इस पाठ में केवल मनुष्यों द्वारा प्रयुक्त सार्थक वाणीयों का विचार किया जायेगा जिनके माध्यम से मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को प्रकट करते है आपस में सम्बंधित भाषाओं को भाषा-परिवार कहते हैं। कौन भाषाएँ किस परिवार में आती हैं, इनके लिये वैज्ञानिक आधार हैं।

इस समय संसार की भाषाओं की तीन अवस्थाएँ हैं। विभिन्न देशों की प्राचीन भाषाएँ जिनका अध्ययन और वर्गीकरण पर्याप्त सामग्री के अभाव में नहीं हो सका है, पहली अवस्था में है। इनका अस्तित्व इनमें उपलब्ध प्राचीन शिलालेखो, सिक्कों और हस्तलिखित पुस्तकों में अभी सुरक्षित है। मेसोपोटेमिया की पुरानी भाषा 'सुमेरीय' तथा इटली की प्राचीन भाषा 'एत्रस्कन' इसी तरह की भाषाएँ हैं। दूसरी अवस्था में ऐसी आधुनिक भाषाएँ हैं, जिनका सम्यक् शोध के अभाव में अध्ययन और विभाजन प्रचुर सामग्री के होते हुए भी नहीं हो सका है। बास्क, बुशमन, जापानी, कोरियाई, अंडमानी आदि भाषाएँ इसी अवस्था में हैं। तीसरी अवस्था की भाषाओं में पर्याप्त सामग्री है और उनका अध्ययन एवं वर्गीकरण हो चुका है। ग्रीक, अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि अनेक विकसित एवं समृद्ध भाषाएँ इसके अन्तर्गत हैं।

14.3 भाषाओं का वर्गीकरण

किसी भी विषय के वर्गीकरण से उस विषय का सूक्ष्मता से ज्ञान होता है। भाषाओं के वर्गीकरण को डॉ. कपिलदेव द्विवेदी ने निम्न श्लोक के द्वारा प्रतिपादित किया है –

परिवाराऽऽकृतेर्भिन्नाः, विश्वभाषा द्विधा मताः।

द्विधा चाऽऽकृतिमूलास्तास्ताः, योगाऽयोगाप्रभेदतः॥

अयोगो भेद एकस्तु, त्रिधा योगात्मको मतः।

श्लिष्टाऽश्लिष्ट-प्रश्लिष्टाश्च, प्रकृति-प्रत्ययात्मकाः।।

अर्थात् विश्व की भाषाओं के दो प्रकार के वर्गीकरण है – आकृतिमूलक और पारिवारिक। आकृतिमूलक वर्गीकरण के दो भेद है – अयोगात्मक और योगात्मक । अयोगात्मक भेद एक ही प्रकार का है। योगात्मक के तीन भेद है – श्लिष्ट (inflecting), अश्लिष्ट(Agglutinating), प्रश्लिष्ट(Incorporating)। योगात्मक भाषाऐं प्रकृति और प्रत्यय के संयोग से बनी हुई होती है। परिवारमूलक भेद को भौगोलिक स्थितियों के अनुसार मुख्य रूप से चार खण्डों में बांटा गया है -

(१) यूरेशिया खण्ड
(२) अफ्रिका खण्ड
(३) प्रशान्त-महासागरीय खण्ड
(४) अमरीका खण्ड

14.4 आकृतिमूलक वर्गीकरण

आकृतिमूलक वर्गीकरण का आधार पदों और वाक्यों की रचना है। पद किस प्रकार बनते है और वाक्यों की रचना किस प्रकार और वाक्यों की रचना किस प्रकार होती है, इस आधार पर किए जाने वाले वर्गीकरण को आकृतिमूलक कहते है। जिन भाषाओं में आकृति (आकार, पद रचना, और वाक्य रचना) की दृष्टि से समानता होती है, उन्हे एक पारिवारिक वर्ग में रखा जाता है। आकृति-मूलक वर्गीकरण में रचना-तत्त्व की मुख्यता रहती है। इसमें शब्द निर्माण के बाह्य रूप पर ध्यान दिया जाता है। आकृतिमूलक वर्गीकरण के दो भेद है – अयोगात्मक और योगात्मक । अयोगात्मक भेद एक ही प्रकार का है। योगात्मक के तीन भेद है – श्लिष्ट (inflecting), अश्लिष्ट(Agglutinating), प्रश्लिष्ट(Incorporating)। योगात्मक भाषाऐं प्रकृति और प्रत्यय के संयोग से बनी हुई होती है।

14.5 अयोगात्मक भाषाऐं

अयोगात्मक उन भाषाओं को कहते है, जिनमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का संयोग नहीं होता है। **प्रत्येक शब्द स्वतन्त्र होता है**। इसमें प्रत्येक शब्द प्रकृति या मूल के तुल्य होता है, अतः इसे Root Language कहते है। इन भाषाओं का व्याकरण नहीं होता। स्वर मात्र के भेद से अर्थ भेद हो जाता है। इन भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय नहीं होते हैं। इस वर्ग की मुख्य प्रतिनिधि भाषा चीनी(स्थान और स्वर प्रधान) है। इसके अतिरिक्त स्यामी, तिब्बती, और बर्मी(ये तीनों निपात प्रधान भाषा हैं), अनामी(स्वर प्रधान), सूडानी(स्थान प्रधान) आदि भाषाऐं इस वर्ग में है।

14.6 योगात्मक भाषाऐं

वे भाषाऐं जिनमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का संयोग रहता है, उन्हें योगात्मक भाषाऐं कहते हैं। अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का संयोग विभिन्न प्रकार से हो सकता है, उनके आधार पर योगात्मक भाषाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है –

1. **अश्लिष्ट योगात्मक भाषाऐं –** अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं को Agglutinative Languages कहते है। यह शब्द लैटिन के Gluten(ग्लूटेन, चूना) Glutinare(ग्लुटिनेयर,

चूने से जोडना या चिपकाना) शब्द से बना है। जैसे चूने से ईंटों को जोडा जाता है और ईंटें साफ दिखाई देती हैं, उसी प्रकार अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में अर्थतत्त्व(प्रकृति) और सम्बन्धतत्त्व(प्रत्यय) इस प्रकार जुडे रहते है कि इनको स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस प्रकार के जोड को पूर्णतया न जुडे होने से 'अश्लिष्ट' और जुडे होने के कारण 'योगात्मक' कहा जाता है। तुर्की(Turkish) भाषा इस वर्ग की प्रतिनिधि भाषा है। इस प्रकार की भाषाऐं हंगेरियन और फिनिश भी है। अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रत्यय या सम्बन्धतत्त्व कहीं अर्थतत्त्व (प्रकृति) से पहले लगता है, कहीं मध्य में, कहीं अन्त में और कहीं आगे-पीछे दोनों ओर। इसी आधार पर इनके चार भाग किए गए हैं – पूर्वयोगात्मक, मध्ययोगात्मक, अन्तयोगात्मक, पूर्वान्तकयोगात्मक।

2. श्लिष्ट योगात्मक भाषाऐं – श्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में अर्थतत्त्व(प्रकृति) और सम्बन्धतत्त्व (प्रत्यय) घनिष्ठता से मिले होते है। दोनों को स्पष्ट रूप से अलग-अलग देखा जा सकता है। अर्थतत्त्व में प्रत्यय के मिलने से कुछ विकार भी आ जाता है, परन्तु प्रत्यय को पहचाना जा सकता है। इस वर्ग में भारोपीय भाषाऐं सेमेटिक और हैमेटिक भाषाऐं आती है। इस वर्ग की भाषाऐं संसार में सबसे अधिक उन्नत हैं। संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, रूसी, अवेस्ता, अंग्रेजी, हिन्दी आदि सभी इसी वर्ग के अन्तर्गत आती है। इस वर्ग की भाषाओं के दो भेद किये जाते है – (१) अन्तर्मुखी (२) बहिर्मुखी। इन दोनों के भी दो भेद किये जाते है – (क) संयोगात्मक (ख) वियोगात्मक । अन्तर्मुखी में अरबी और बहिर्मुखी में संस्कृत प्रतिनिधि भाषा है। संयोगात्मक भाषाओं में सम्बन्धतत्त्व अर्थतत्त्व(प्रकृति, शब्द या धातु) के बाद लगते है और प्रकृति + प्रत्यय = शब्दरूप, धातुरूप बनते हैं। सम्बन्धतत्त्व अर्थतत्त्व के साथ घुलमिल जाता है। इसकी प्रतिनिधि भाषा संस्कृत है। ग्रीक, लैटिन, अवेस्ता, रूसी भी संयोगात्मक हैं। वियोगात्मक भाषाओं में सम्बन्धतत्त्व अलग से लगाया जाता है। हिन्दी, अंग्रेजी आदि वियोगात्मक हो गई हैं। लैटिन संयोगात्मक थी, उससे विकसित फ्रेंच वियोगात्मक है। हिन्दी के तुल्य अन्य भारतीय भाषाऐं बंगला, मराठी, गुजराती आदि भी वियोगात्मक हो गई हैं।

3. प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाऐं –

जिन भाषाओं में अर्थतत्त्व(प्रकृति) और सम्बन्धतत्त्व(प्रत्यय) इस प्रकार से जुडे होते हैं कि उनको अलग–अलग करना या अलग –अलग समझाना संभव ही नहीं होता वे प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाऐं कहलाती हैं। इसकों भी दो भागों में बांटा गया है–

(क) पूर्ण प्रश्लिष्ट – इसमें अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व के पूर्ण प्रश्लेष(मिलन) से पूरा वाक्य एक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है। समस्त पद के तुल्य सारा वाक्य एक शब्द हो जाता है। इसे पूर्ण समासात्मक भी कह सकते है। दक्षिण अमेरिका की "चेरोकी" भाषा में ऐसे उदाहरण मिलते है।

(ख) आंशिक प्रश्लिष्ट – इसमें सर्वनाम और क्रियाओं का पूर्ण रूप से मिश्रण होता हैं। क्रिया का स्वरूप नगण्य हो जाता है। इसे 'अंशतः समासात्मक' कहा जा सकता है। इसमें केवल सर्वनाम और क्रिया का मिश्रण होता है। इसमें पूर्ण प्रश्लिष्ट के तुल्य संज्ञा, विशेषण आदि का मिश्रण नहीं होता है। पेरोनीज पर्वत के पश्चिमी भाग में बोली जाने वाली "बाष्क" भाषा में इसके उदाहरण मिलते हैं।

14. 7 पारिवारिक वर्गीकरण के आधार

भाषा का सम्बन्ध व्यक्ति, समाज और देश से होता है। इसलिए प्रत्येक भाषा की निजी विशेषता होती है। इनके आधार पर वह एक ओर कुछ भाषाओं से समानता स्थापित करती है और दूसरी ओर बहुत-सी भाषाओं से असमानता। मुख्यतः यह वैशिष्ट्यगत साम्य-वैषम्य दो प्रकार का होता है– आकृतिमूलक और अर्थतत्त्व सम्बन्धी। भाषाओं के वर्गीकरण के अनेक आधार हो सकते हैं, जैसे – महाद्वीप, देश, धर्म, काल, परिवार, प्रभाव, भाषाओं की आकृति इत्यादि। परन्तु इनमें से आकृति, अर्थ व इतिहास को आधार मानकर किये गये वर्गीकरण ही तर्कसंगत माने गये है।

प्रथम के अन्तर्गत शब्दों की आकृति अर्थात् शब्दों और वाक्यों की रचनाशैली की समानता देखी जाती है। दूसरे में अर्थतत्त्व की समानता रहती है। इनके अनुसार भाषाओं के वर्गीकरण की दो पद्धतियाँ होती हैं–आकृतिमूलक और पारिवारिक या ऐतिहासिक। इस विवेचन का सम्बन्ध ऐतिहासिक वर्गीकरण से है इसलिए उसके आधारों को थोड़ा विस्तार से जान लेना चाहिए। इसमें आकृतिमूलक समानता के अतिरिक्त निम्निलिखित समानताएँ भी होनी चाहिए।

1. भौगोलिक समीपता

भौगोलिक दृष्टि से प्रायः समीपस्थ भाषाओं में समानता और दूरस्थ भाषाओं में असमानता पायी जाती है। इस आधार पर संसार की भाषाएँ अफ्रीका, यूरेशिया, प्रशांतमहासागर और अमरीका के खण्ड़ों में विभाजित की गयी हैं। किन्तु यह आधार बहुत अधिक वैज्ञानिक नहीं है। क्योंकि दो समीपस्थ भाषाएँ एक-दूसरे से भिन्न हो सकती हैं और दो दूरस्थ भाषाएँ परस्पर समान। भारत की हिन्दी और मलयालम दो भिन्न परिवार की भाषाएँ हैं किन्तु भारत और इंग्लैंड जैसे दूरस्थ देशों की संस्कृत और अंग्रेजी एक ही परिवार की भाषाएँ हैं।

2. शब्दानुरूपता

समान शब्दों का प्रचलन जिन भाषाओं में रहता है उन्हें एक कुल के अन्तर्गत रखा जाता है। यह समानता भाषा-भाषियों की समीपता पर आधारित है और दो तरह से सम्भव होती है। एक ही समाज, जाति अथवा परिवार के व्यक्तियों द्वारा शब्दों के समान रूप से व्यवहृत होते रहने से समानता आ जाती है। इसके अतिरिक्त जब भिन्न देश अथवा जाति के लोग सभ्यता और साधनों के विकसित हो जाने पर राजनीतिक अथवा व्यावसायिक हेतु से एक-दूसरे के सम्पर्क में आते हैं तो शब्दों के आदान-प्रदान द्वारा उनमें समानता स्थापित हो जाती है। पारिवारिक वर्गीकरण के लिए प्रथम प्रकार की अनुरूपता ही काम की होती है। क्योंकि ऐसे शब्द भाषा के मूल शब्द होते हैं। इनमें भी नित्यप्रति के कौटुम्बिक जीवन में प्रयुक्त होने वाले संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्द ही अधिक उपयोगी होते हैं। इस आधार में सबसे बड़ी कठिनाई यह होती है कि अन्य भाषाओं से आये हुए शब्द भाषा के विकसित होते रहने से मूल शब्दों में ऐसे घुलमिल जाते हैं कि उनको पहचान कर अलग करना कठिन हो जाता है।

इस कठिनाई का समाधान एक सीमा तक अर्थगत समानता है। क्योंकि एक परिवार की भाषाओं के अनेक शब्द अर्थ की दृष्टि से समान होते हैं और ऐसे शब्द उन्हें एक परिवार से सम्बन्धित करते हैं। इसलिए अर्थपरक समानता भी एक महत्त्वपूर्ण आधार है

3. ध्वनिसाम्य

प्रत्येक भाषा का अपना ध्वनि-सिद्धान्त और उच्चारण-नियम होता है। यही कारण है कि वह अन्य भाषाओं की ध्वनियों से जल्दी प्रभावित नहीं होती हैं और जहाँ तक हो सकता है उन्हें ध्वनिनियम के अनुसार अपनी निकटस्थ ध्वनियों से बदल लेती है। जैसे फारसी की क, ख, फ़ आदि ध्वनियाँ हिन्दी में निकटवर्ती क, ख, फ आदि में परिवर्तित होती है। अतः ध्वनिसाम्य का आधार शब्दावली-समता से अधिक विश्वसनीय है। वैसे कभी-कभी एक भाषा के ध्वनिसमूह में दूसरी भाषा की ध्वनियाँ भी मिलकर विकसित हो जाती हैं और तुलनात्मक निष्कर्षों को भ्रामक कर देती हैं। आर्य भाषाओं में वैदिक काल से पहले मूर्धन्य ध्वनियाँ नहीं थी, किन्तु द्रविड़ भाषा के प्रभाव से आगे चलकर विकसित हो गयीं।

4. व्याकरणगत समानता

व्याकरणिक आधार सबसे अधिक प्रामाणिक होता है। क्योंकि भाषा का अनुशासन करने के कारण यह जल्दी बदलता नहीं है। व्याकरण की समानता के अन्तर्गत धातु, धातु में प्रत्यय लगाकर शब्द-निर्माण व्याकरणिक प्रक्रिया द्वारा शब्दों से पदों की रचना तथा वाक्यों में पद-विन्यास के नियम आदि की समानता का निर्धारण आवश्यक है।

इन चार आधारों पर भाषाओं की अधिकाधिक समानता निश्चित करते उनका वर्गीकरण किया जाता है। इस सम्बन्ध में स्पष्टरूप से समझ लेना चाहिए कि यह साम्य-वैषम्य सापेक्षिक है। जहाँ एक ओर भारोपीय परिवार की भाषाएँ अन्य परिवार की भाषाओं से भिन्न और आपस में समान हैं वहाँ दूसरी ओर संस्कृत, फारसी, ग्रीक आदि भारोपीय भाषाएँ एक-दूसरे से इन्हीं आधारों पर भिन्न भी हैं।

14. 8 भौगोलिक वर्गीकरण की प्रक्रिया

वर्गीकरण करते समय सबसे पहले भौगोलिक समीपता के आधार पर संपूर्ण भाषाएँ यूरेशिया, प्रशांतमहासागर, अफ्रीका और अमरीका खंडों अथवा चक्रों में विभक्त होती हैं। फिर आपसी समानता रखनेवाली भाषाओं को एक कुल या परिवार में रखकर विभिन्न परिवार बनाये जाते हैं। अवेस्ता, फारसी, संस्कृत, ग्रीक आदि की तुलना से पता चला कि उनकी शब्दावली, ध्वनिसमूह और रचना-पद्धति में काफी समानता है। अतः भारत और यूरोप के इस तरह की भाषाओं का एक भारतीय कुल बना दिया गया है। परिवारों को वर्गों में विभक्त किया गया है। भारोपीय परिवार में शतम् और केन्टुम ऐसे ही वर्ग हैं। वर्गों का विभाजन शाशाओं में हुआ है। शतम् वर्ग की 'ईरानी' और 'भारतीय आर्य' प्रमुख शाखाएँ हैं। शाखाओं को उपशाखा में बाँटा गया है। ग्रियर्सन ने आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं को भीतरी और बाहरी उपशाखा में विभक्त किया है। अतः में उपशाखाएँ भाषा-समुदायों और समुदाय भाषाओं में बँटते हैं। इस तरह भाषा पारिवारिक-वर्गीकरण की इकाई है। इस समय भारोपीय परिवार की भाषाओं का अध्ययन इतना हो चुका है कि यह पूर्ण प्रक्रिया उस पर लागू हो जाती है। इन नामों में थोड़ी हेर-फेर हो सकता है, किन्तु इस प्रक्रिया की अवस्थाओं में प्रायः कोई अन्तर नहीं होता।

उन्नीसवीं शती में ही विद्वानों का ध्यान संसार की भाषाओं के वर्गीकरण की ओर आकृष्ट हुआ और आज तक समय-समय पर अनेक विद्वानों ने अपने अलग-अलग वर्गीकरण प्रस्तुत किये है; किन्तु अभी तक कोई वैज्ञानिक और प्रामाणिक वर्गीकरण प्रस्तुत नहीं हो सका है। इस समस्या को लेकर

भाषाविदों में बड़ा मतभेद है। सन् 1822 में संस्कृत विशेषज्ञ जर्मन विद्वान् विल्हेम वान हम्बोल्न ने 13 भाषा परिवार माने तथा ग्रे ने 26 एवं पार्टिरिज ने 10, फ्रेडरिख मूलर ने 100, डॉ. भोलाराम तिवारी ने 13, पार्टरिज ने 13, डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा ने 18 परिवार माने हैं और राइस विश्व की समस्त भाषाओं को केवल एक ही परिवार में रखते हैं। किन्तु अधिकांश विद्वान् इनकी संख्या बारह या तेरह मानते हैं। डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा के अनुसार 18 परिवार निम्न प्रकार से हैं –

यूरेशिया खण्ड – 1. भारत यूरोपीय परिवार 2. द्रविड परिवार 3. बुरुशक्की परिवार 4. यूराल-अल्ताई 5. जापानी-कोरीयाई परिवार 6. बास्क परिवार 7. काकेशी परिवार 8. सामी-हामी परिवार 9. अत्युत्तरी(आइपरबोरी) परिवार 10. चीनी या एकाक्षरी

अफ्रिका खण्ड – 11. होतेन्तो-बुरामैनी परिवार 12. बस्तू परिवार 13. सूडानी परिवार

प्रशान्त-महासागरीय खण्ड – 14. दक्षिणपूर्व एशियाई परिवार 15.पापुई परिवार 16. मलय-बहुद्विपीय परिवार 17. आस्ट्रेलियाई परिवार

अमरीका खण्ड – 18. अमरीका –खण्ड

14.9 भारोपीय भाषा परिवार

(Indo-European family) **हिन्द-यूरोपीय भाषा-परिवार**

यह समूह यूरेशिया का ही नहीं अपितु विश्व में भाषाओं का सबसे बड़ा परिवार है और सबसे महत्वपूर्ण भी है क्योंकि अंग्रेज़ी, रूसी, प्राचीन फारसी, हिन्दी, पंजाबी, जर्मन - ये सभी भाषाएँ इसी समूह से संबंध रखती हैं। इसे 'भारोपीय भाषा-परिवार' भी कहते हैं। विश्व के प्रत्येक भाग में इस परिवार की भाषाऐं बोली जाती है। विश्व जनसंख्या के लगभग आधे लोग (४५%) भारोपीय भाषा बोलते हैं।

संस्कृत, ग्रीक और लातीनी जैसी शास्त्रीय भाषाओं का संबंध भी इसी समूह से है। लेकिन अरबी एक बिल्कुल विभिन्न परिवार से संबंध रखती है। इस परिवार की प्राचीन भाषाएँ**बहिर्मुखी श्लिष्ट-योगात्मक** (end-inflecting) थीं। इसी समूह को पहले **आर्य-परिवार** भी कहा जाता था। ध्वनि विषयक साम्य-वैषम्य के आधार पर भारोपीय परिवार दो वर्गों में विभक्त किया जाता है। फिनलैड ने इन दोनों वर्गों को सतम् और कैण्टुम वर्ग कहा है। प्रतिनिधि भाषा के रूप में लैटिन तथा अवेस्ता को आधार बनाकर संख्या 'सौ' के वाचक शब्दों के द्वारा समझाया गया है। लैटिन में सौ को केन्टुम् और अवेस्ता में सतम्, संस्कृत में शतम् –

सतम् वर्ग	**केन्टुम वर्ग**
अवेस्ता – सतम्	लैटिन – केन्टुम
फारसी – सद	ग्रीक – हेकटोन (अस्तोम)
संस्कृत – शतम्	इटेलियन – केन्तो
हिन्दी – सौ	फ्रैंच – सं, केन्त(सेन्ट)
रूसी – स्तो	केल्टीक(आयरिश) – केत्
बल्गेरीयन – सुतो	गबेलिक – बुड

लिथुआनियस – स्जिम्तास तोखरी – कन्ध

प्राकृत – सरं गाथिक – हुन्ड

उपरोक्त वर्गों के सन्दर्भ में डॉ. कपिलदेव द्विवेदी ने एक श्लोक का निर्माण भी किया है –

ईरानी-भारती चैव, बाल्टी-सुस्लाविकी तथा।

आर्मीनी अल्बनी चैताः, शतम्-वर्गे समाश्रिताः।।

इटालिकी च ग्रीकी च, जर्मानिक् केल्टिकी तथा।

हित्ती तोखारिकी चैताः, केन्टुम्-वर्गे प्रकीर्तिताः।।

भारोपीय शब्द भारत + यूरोपीय का संक्षित रूप है। यह indo-european का अनुवाद है। भारोपीय में भारत से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है। इस परिवार की दस शाखाऐं हैं – 1. भारत-ईरानी(आर्य) **2.** बाल्टिक-स्लाविक 3. अर्मीनी 4. अल्बानी (इलीरी) 5. ग्रीक (हेलोनिक) 6. केल्टिक 7. जर्मानिक (ट्यूटानिक) 8. इटालिक 9. हिटाइट (तित्ती) 10. तोखारी

1 . भारत-ईरानी या आर्य शाखा – इस शाखा मे संस्कृत और अवेस्ता मुख्य भाषाऐं हैं। संस्कृत और अवेस्ता में इतनी समानता है कि इनको एक पृथक् शाखा माना गया है। इसे भारत –ईरानी या हिन्द-ईरानी शाखा कहते है। ईरान शब्द 'आर्याणाम्' का अपभ्रंश रूप है। भारोपीय परिवार में 'आर्य-परिवार' या आर्य शाखा का सर्वाधिक महत्त्व है। विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' अपने शुद्ध व प्राचीनतम रूप में संस्कृत में उपलब्ध है। पारसियों का धर्मग्रन्थ 'अवेस्ता' इसी शाखा में प्राप्य है। कुछ विद्वान् इसे वैदिक काल के समकक्ष मानते है। 'अवेस्ता' को संस्कृत 'अवस्था' शब्द का अपभ्रंश माना जाता है। प्राचीन ईरानी की दो प्रमुख भाषाऐं थी – १. पूर्वी ईरानी, जिसे 'अवेस्ता' कहते है तथा २. पश्चिमी ईरानी, जिसे 'प्राचीन फारसी' कहते है। जिस प्रकार संस्कृत से हिन्दी का विकास हुआ उसी तरह प्राचीन फारसी से आधुनिक फारसी का जन्म हुआ।

2. बाल्टिक-स्लाविक – बाल्टिक-स्लाविक को लेट्टो–स्लाविक भी कहते है। इस उपपरिवार की दो शाखाऐं हैं – बाल्टिक और स्लाविक

(क) **बाल्टिक –** बाल्टिक सागर के तट पर बोली जाने वाली भाषाओं को बाल्टिक कहते है। इसमें तीन भाषाऐं हैं – १. प्राचीन एशियन २. लिथुआनियन ३. लेट्टिक

(ख) **स्लाविक** - इस भाषा को दिशाभेद से तीन भागों में विभक्त किया गया है –

1. **पूर्वी स्लाविक –** इसमें तीन भाषाऐं आती हैं – महारूसी, श्वेतरूसी, लघुरूपी
2. **पश्चिमी स्लाविक –** इसमें तीन भाषाऐं आती हैं – जेक, पोलिश और स्लोवाकी
3. **दक्षिणी स्लाविक –** इसमें दो भाषाऐं मुख्य हैं – बल्गेरी और सर्बो-क्रोटी

3. **अर्मीनी –** यह आमीर्निया की भाषा है। इसमें दो हजार से अधिक शब्द ईरानी भाषा के आ गए हैं। अर्मीनिया के वर्तमान में दो रूप हैं – १. स्तम्बूल – यह यूरोप वाले भाग में बोली जाती है। २. अरारट – यह एशिया वाले क्षेत्र में बोली जाती है।

4. **अल्बानी (इलीरी) –** अल्बानी भाषा प्राचीन इलीरी भाषा का ही वर्तमान अवशिष्ट रूप है। इस पर ग्रीक, तुर्की और स्लाविक भाषाओं का बहुत प्रभाव पड़ा है। यह एड्रियाटिक सागर के पूर्वी पहाडी प्रदेश की भाषा है। इसके बोलने वालों की संख्या लगभग १५ लाख है।

5. **ग्रीक (हेलोनिक) –** इसका क्षेत्र ग्रीस, दक्षिणी अल्बानिया और युगोस्लाविया, बल्गेरिया-टर्की-साइप्रस का कुछ भाग है। इसमें प्राचीन काल में बहुत सी बोलियां थीं, जिसमें एट्टिक और डोरिक मुख्य थीं। इसमें सबसे पुराने ग्रन्थ होमर के दो महाकाव्य हैं – इलियड और ओडिसी। साहित्यिक ग्रीक का आधार एट्टिक भाषा थीं। यही ग्रीक की जनभाषा थीं। यूरोपीय सभ्यता का स्रोत ग्रीक भाषा है। ग्रीक वर्णमाला से ही यूरोप की सभी लिपियों का विकास हुआ है। वैदिक संस्कृत और ग्रीक की तुलना करने पर बहुत सी समानताऐं दिखाई पडती है – संस्कृत और ग्रीक में मूल भारोपीय ध्वनियां सुरक्षित है। दोनों में संगीतात्मक स्वर है। दोनों में अव्ययों(उपसर्ग व क्रिया विशेषण) की बहुलता है। दोनों में द्विवचन मिलता है। दोनों के क्रियारूपों में भी समानता है। दोनों में समास की सुविधा है।

6. **केल्टिक –** लगभग ईसा पूर्व २८० तक यह भाषा यूरोप के बहुत बडे भूभाग में बोली जाती थी। यह पूर्व एशिया माइनर (वर्तमान तुर्की) तक फैली हुई थी। अब यह यूरोप के पश्चिमी भाग में ही सीमित रह गई है। इसके दो मुख्य वर्ग है – १. क-वर्ग(गेलिक) २. प-वर्ग(ब्रिटानिक)। क-वर्ग में आयरिश मुख्य है। प-वर्ग में वेल्श और ब्रिटन मुख्य है। केल्टिक और इटालिक भाषाओं में पर्याप्त साम्य है।

7. **जर्मानिक (ट्यूटानिक) –** यह भारोपीय परिवार की सबसे अधिक विस्तृत भूभाग में बोली जाने वाली भाषा है। इसकी एक शाखा अंग्रेजी विश्व में सबसे अधिक फैली हुई है। यह विश्वभाषा का रूप ले सकती है।

   इसका क्षेत्रीय विभाजन इस प्रकार है –

   पूर्वी क्षेत्र – गाथिक

   उत्तरी क्षेत्र में – आइसलैण्डिक (आइसलैण्ड में), नार्वेजियन(नार्वे में), डेनिश(डेन्मार्क में), स्वीडिश (स्वीडन में)

   पश्चिमी क्षेत्र – अंग्रेजी (इंग्लैण्ड में), उच्च जर्मन (दक्षिणी जर्मनी में), निम्न जर्मन (उत्तरी जर्मनी में), डच (हालैण्ड में), फ्लेमिश (बेल्जियम में)

8. **इटालिक –** इटालिक या रोमान्स वर्ग का क्षेत्रीय विभाजन निम्न प्रकार से है – (क) इटालियन – इटली, सिसली, कोर्सिका में (ख) फ्रेंच – फ्रांस में (ग) स्पेनिश – स्पेन में (घ) रूमानियन – रूमानिया में (ङ) पुर्तगाली – पुर्तगाल में रोमान्स वर्ग की भाषाओं का विकास लैटिन से हुआ है। लैटिन मूलतः रोम और उसके समीपवर्ती जिले की भाषा थी। इसका सबसे पुराना साहित्य छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक का मिलता है। रोमान्स शब्द लैटिन रोमनिके Romanice से निकला है, जिसका अर्थ है – 'रोमन या रोम निवासियों का'। लैटिन से फ्रेंच, इटालियन, स्पेनिश और पुर्तगाली का विकास हुआ है। इनमें रचनात्मक की अपेक्षा ध्वन्यात्मक भेद अधिक है।

9. **हिटाइट (हित्ती) –** ह्यूगो विकलर को १८९३ ई. में टर्की के बोगजकोई (अंकारा से ९० मील पूर्व) से कुछ कीलाक्षर अभिलेख मिले थे। १९०५ से १९०७ ई. तक पुनः खुदाई में हजारों अभिलेख मिले। इनके अध्ययन से हिटाइट भाषा का ज्ञान हुआ। प्रो. ह्राजनी ने १९१७ में अपने ग्रन्थ में सिद्ध किया कि यह भारोपीय भाषा परिवार की ही भाषा है।

10. **तोखारी –** फ्रेंच और जर्मन विद्वानों ने २०वीं सदी के प्रारम्भ में मध्य एशिया के तुर्फान प्रदेश में भारतीय लिपि (ब्राह्मी और खरोष्ठी) में लिखे अनेक ग्रन्थ और पत्र प्राप्त किये। इनके अध्ययन के पश्चात् प्रो.सीग(Sieg) ने यह निष्कर्ष निकाला कि यह भारोपीय परिवार के केन्टुम् वर्ग की भाषा है। इस भाषा को बोलने वाले 'तोखर' लोग थे। महाभारत में इन्हें 'तुषाराः' कहा है। ग्रीक में इन्हें तोखराई कहा गया है। तोखरों का राज्य मध्य एशिया में द्वितीय शताब्दी ई.पू. से ७वीं सदी ई. तक था। इसे हूणों ने नष्ट किया था।

14.10 चीनी-तिब्बती भाषा-परिवार व अन्य यूरेशिया के भाषा परिवार

चीनी-तिब्बती भाषा-परिवार (The Sino - Tibetan Family)

विश्व में जनसंख्या के अनुसार सबसे बड़ी भाषा **मन्दारिन** (उत्तरी चीनी भाषा) इसी परिवार से संबंध रखती है। चीन और तिब्बत में बोली जाने वाली कई भाषाओं के अलावा बर्मी भाषा भी इसी परिवार की है। इनकी स्वरलहरी एक ही है। एक ही शब्द अगर ऊँचे या नीचे स्वर में बोला जाय तो शब्द का अर्थ बदल जाता है।

श्री राजेन्द्र सिंह ने भारत के संदर्भ में इस भाषा परिवार को 'नाग भाषा परिवार' नाम दिया है। इसे 'एकाक्षर परिवार' भी कहते हैं। कारण कि इसके मूल शब्द प्राय: एकाक्षर होते हैं। इसमें विभक्ति प्रत्यय आदि के द्वारा पद रचना नहीं होती । ये भाषाएँ कश्मीर, हिमाचल देश, उत्तरांचल, नेपाल, सिक्किम, पश्चिम बंगाल, भूटान, अरूणाचलप्रदेश, आसाम, नागालैंड, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा और मिजोरम में बोली जाती हैं।

बुरुशक्की या खजुना परिवार – इस परिवार का क्षेत्र भारता का उत्तरी-पश्चिमी सिरा है। कुछ विद्वान् इसे मुंडा और द्राविड परिवार से संबद्ध मानते है। इसका क्षेत्र भारत-ईरानी, तुर्की और तिब्बती परिवार से घिरा है। इस भाषा में सर्वनाम प्रधान होता है। किसी समय यह भारत का महत्त्वपूर्ण भाषा परिवार था।

काकेशी परिवार – इसका क्षेत्र कृष्ण सागर तथा कैस्पियन सागर के मध्य स्थित काकेशस पर्वत के समीपस्थ भूभाग है। सरकसी, मिंगली, चेचेन, लेगी, ज्यार्जी, रचानी आदि इस परिवार की भाषाऐं हैं। ये भाषाऐं अश्लिष्ट योगात्मक हैं। इनमें कारकों की अधिकता हैं तथा चेचेनिश आदि भाषाओं में 6 लिंग प्राप्त होते हैं।

सामी-हामी भाषा-परिवार या अफ्रीकी-एशियाई भाषा-परिवार

(The Afro - Asiatic family or Semito-Hamitic family)

कुछ विद्वान् इसको दो परिवारों का संयुक्त रूप मानते है। तथा एक ही परिवार की दो शाखाओं के रूप में माना जाता है। बाइबिल के कथानक के अनुसार हजरत नौह के दो पुत्रों सेम तथा हेम के नाम पर सेमेटिक एवं हेमेटिक पडा था। इस परिवार की सामी एशिया में अरब, इराक, फिलीस्तीन, सीरिया

तथा अफ्रिका में मिश्र, इथियोपिया, तुनिसिया, अल्जीरिया एवं मोरक्को आदि है। तथा हापी अफ्रिका में लीबिया, सोमालीलैण्ड एवं इथियोपिया तक विस्तृत है। ये दोनों भाषायें श्लिष्ट-योगात्मक एवं अन्तर्मुखी हैं। इसकी प्रमुख भाषाओं में अक्करीयन, कनानित, अरमाइक, एबीसीनियन, लीबियन, मेरोइटिक, एथियोपिक(कुशीत), मिश्री, असेरी, सुमेरी, अक्कादी और कनानी, अरबी और इब्रानी हैं। इन भाषाओं में मुख्यतः तीन धातु-अक्षर होते हैं और बीच में स्वर घुसाकर इनसे क्रिया और संज्ञाएँ बनायी जाती हैं (अन्तर्मुखी श्लिष्ट-योगात्मक भाषाएँ)।

जापानी-कोरीयाई परिवार – इस परिवार की भाषाऐं जापान तथा कोरिया में बोली जाती है।इसके वर्ग निर्णय में मतभेद है। कुछ विद्वान् दोनों को स्वतन्त्र मानते हैं, कुछ यूराल-अल्ताई परिवार में रखने के पक्ष में है तथा कुछ विद्वान् इसे मलय-पोलिनेशियाई परिवार में रखते है।

अत्युत्तरी(हाईपर बोरी) परिवार -

इस परिवार का नामकरण भौगोलिक आधार पर रखा गया है। इसका उपनाम पुरा एशियाई अथवा पैलियो-एशियाटिक भी है। इसका क्षेत्र साइबेरिया का उत्तर-पूर्वी प्रदेश में फैला हुआ है। इस परिवार की प्रमुख भाषाओं में युकगिर, कमचटका, चुकची तथा अइनू आदि है।

द्रविड़ भाषा-परिवार (The Dravidian Family)

यह परिवार दक्षिण भारत में नर्मदा गोदावरी से कुमारी अन्तरीप तक फैला हुआ है। इस परिवार को 'तमिल परिवार' भी कहते है। भाषाओं का द्रविड़ी परिवार इस लिहाज़ से बड़ा दिलचस्प है कि हालाँकि ये भाषाएँ भारत के दक्षिणी प्रदेशों में बोली जाती हैं लेकिन उनका उत्तरी क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषाओं से कोई संबंध नहीं है(संस्कृत से ऋणशब्द लेने के अलावा)।

इसलिए उर्दू या हिंदी का अंग्रेज़ी या जर्मन भाषा से तो कोई रिश्ता निकल सकता है लेकिन मलयालम भाषा से नहीं.

दक्षिणी भारत और श्रीलंका में द्रविड़ी समूह की कोई 26 भाषाएँ बोली जाती हैं लेकिन उनमें ज़्यादा मशहूर तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ हैं। ये अन्त-अश्लिष्ट-योगात्मक भाषाएँ हैं। यह भाषा-परिवार वाक्य तथा स्वर के कारण यूराल-अल्ताई परिवार के निकट पहुंच जाता है।

यूराल-अल्ताई परिवार –

यह परिवार उत्तर में उत्तरी महासागर से लेकर दक्षिण में भूमध्य सागर तक, पश्चिम में अटलांटिक महासागर से रूस में आंखोटस्क सागर तक एवं हंगरी, टर्की, फिनलैण्ड आदि सभी आते है। इसका क्षेत्र बहुत विस्तृत है, किन्तु मुख्यतः साइबेरिया, मंचूरिया और मंगोलिया में हैं।प्रमुख भाषाओं के आधार पर इस कुल के अन्य नाम – 'तूरानी', 'सीदियन', 'फोनी-तातारिक' और 'तुर्क-मंगोल-मंचू' कुल भी हैं। प्रमुख भाषाएँ–तुर्की या तातारी, किरगिज, मंगोली और मंचू है , जिनमे सर्व प्रमुख तुर्की है। साहित्यिक भाषा उस्मानली है। तुर्की पर अरबी और फारसी का बहुत अधिक प्रभाव था किन्तु आजकल इसका शब्दसमूह बहुत कुछ अपना है। ध्वनि और शब्दावली की दृष्टि से इस कुल की यूराल और अल्ताई भाषाएँ एक-दूसरे से काफी भिन्न हैं। इसलिए कुछ विद्वान् इन्हें दो पृथक् कुलों में रखने के पक्ष में भी हैं, किन्तु व्याकरणिक साम्य पर निस्सन्देह वे एक ही कुल की भाषाएँ ठहरती हैं। प्रत्ययों के योग से शब्दनिर्माण का नियम, धातुओं की अपरिवर्तनीयता, धातु और प्रत्ययों की स्वरानुरूपता आदि एक कुल की भाषाओं की मुख्य विशेषताएँ हैं। स्वरानुरूपता से अभिप्राय यह है

कि मक प्रत्यय यज्धातु में लगने पर यज्मक् किन्तु साधारणतया विशाल आकार और अधिक शक्ति की वस्तुओं के बोधक शब्द पुंल्लिंग तथा दुर्बल एंव लघु आकार की वस्तुओं के सूचक शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। (लिखना) में यज् के अनुरूप रहेगा, किन्तु सेव् में लगने पर, सेवमेक (तुर्की), (प्यार करना) में सेव् के अनुरूप मेक हो जायगा।

बास्क परिवार – यह भाषा परिवार पेनटीज पर्वत के पश्चिमी भाग में फ्रांस एवं स्पेन के सीमा प्रदेशों में पाया जाता है। इस परिवार की भाषाऐं प्रधानतः अश्लिष्ट योगात्मक है। इसमें मुख्यतः आठ बोलियां बोली जाती है। बास्क इस परिवार की सबसे प्रमुख भाषा है।

14.11 पारिभाषिक शब्दावली

1. **शिलालेख -** पत्थर की शिलाओं पर लिखे गये आलेख
2. **कृत्स्नं -** सम्पूर्ण
3. **वर्गीकरण -** विभाजन
4. **दीप्यते -** प्रकाशित होता है
5. **सार्थक -** जिसका कुछ अर्थ प्रकट होता हो
6. **श्लिष्टा -** आपस में मिला हुआ
7. **अश्लिष्ट -** बिखरा हुआ
8. **प्रश्लिष्ट -** आपस में बहुत अच्छी तरह से मिला हुआ
9. **त्रिधा -** तीन प्रकार का
10. **अयोगात्मक -** जो आपस में जुडा हुआ न हो
11. **बहिर्मुखी -** बाहर की ओर प्रकट होने वाला
12. **आकृतिमूलक -** जिनका ज्ञान उनकी आकृति के आधार पर होता है
13. **अव्यय -** वे शब्द जो किसी काल, लिङ्ग, वचन में परिवर्तित नहीं होते हैं
14. **बहुलता -** अधिकता

14.12 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. भाषा विज्ञान का संक्षेप में परिचय प्रदान करें
2. भाषाओं के वर्गीकरण के मुख्य आधारों का वर्णन करें
3. सतम् व केन्टुम् वर्ग का अन्तर स्पष्ट करें
4. भारोपीय भाषा परिवार की शाखाओं का संक्षेप में वर्णन करें
5. यूराल-अल्ताई भाषा परिवार का परिचय प्रदान करें
6. सामी-हामी भाषा परिवार का संक्षेप में वर्णन प्रदान करें

14.13 सारांश

प्रियछात्र! इस ईकाई के अध्ययन से निश्चित रूप से आपका भाषा विज्ञान विषयक ज्ञानवर्धन हुआ। भाषा मनुष्यों के परस्पर सम्प्रेषण का एक माध्यम है, जो कि देश काल परिस्थिति के अनुसार भिन्नता को प्राप्त होती है। भाषा से संबंधित विज्ञान को ही भाषा विज्ञान कहा गया। कुछ विद्वानों ने सम्पूर्ण विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं का गहनता से अध्ययन किया व विवध भाषाओं के परस्पर संबंध व विकास क्रम को जानने का प्रयास किया। भाषाओं की परस्पर समानता संस्कृतियों के परस्पर आदान प्रदान व इतिहास को जानने का भी एक अच्छा माध्यम होती है। और इस विज्ञान के अध्ययन का क्षेत्र भी अत्यन्त विस्तृत है, जो कि सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। अतः विशवविद्यालयों में भाषा विज्ञान का एक अलग विधा के रूप में अध्ययन करवाया जाता है। उक्त ईकाई में आपने भाषा विज्ञान क संक्षिप्त परिचय प्राप्त किया। विश्व की भाषाओं के वर्गीकरण के आकृतिमूलक और पारिवारिक भेद से मुख्य आधारों को जाना तथा मुख्य रूप से भारोपीय भाषा परिवार का विस्तृत रूप से अध्ययन किया। इस ईकाई के अध्ययन से निश्चित रूप से आपका भाषा विज्ञान व भारोपिय भाषा परिवार के संबंध में ज्ञान वर्धन हुआ होगा, ऐसी आशा की जाती है।

14.14 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. द्विवेदी, कपिलदेव, भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2012.
2. ग्रियर्सन, जार्ज अ, भारत का भाषा सर्वेक्षण, सम्पा० धीरेन्द्र वर्मा, एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल, 1877.
3. गुप्त , मूतीलाल ,आधुनिक भाषा विज्ञान की भूमिका , चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1974.
4. भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,1999.